बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी की ओर से जेपी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित कार्यक्रम में बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के संबोधन को सुनने के लिए उपस्थित लोग।

रविवार को बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के संबोधन को सुनने के लिए भूटान से आए विद्यार्थी। • अतुल मोदी (सभी फोटो)

दलाई लामा ने ग्रेनो में 'सफलता और प्रसन्नता' विषय पर किया संबोधन, भारत को सांप्रदायिक सहिष्णु और मजबूत आधार वाला देश कहा

भ्रष्टाचार व संप्रदाय का गलत प्रयोग भी हिंसा : दलाई लामा

न मुल्क की सीमा और न ही उम्र का बंधन

ग्रेटर नोएडा | पंकज पाराशर

पूरी दुनिया में भ्रष्टाचार है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। भ्रष्टाचार भी हिंसा का एक रूप है। इसी तरह धर्म या संप्रदाय का गलत प्रयोग करके लोगों की भावनाओं को भड़काना भी हिंसा है। रविवार को बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा ने बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी के कार्यक्रम में ये बातें कहीं। वह ग्रेटर नोएडा में 'सफलता और प्रसन्नता' विषय पर संबोधन करने आए थे।

दलाई लामा ने कहा कि 'भारत मजबूत आधार वाला सहिष्णु देश है। यहां हजारों सालों से सारे धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। मैंने एक ऐसा गांव देखा जहां मुसलमानों के सैकड़ों परिवारों के बीच तीन हिंदू परिवार रह रहे हैं। उनको कोई डर नहीं है। मैं जब 1959 में भारत आया तो युवा था। पिछले 54 वर्षों में जो मैंने सीखा, वह इस देश की देन है। मैंने यहां लोकतंत्र, अहिंसा, करुणा और सांप्रदायिक सहिष्णुता के सही मतलब को जाना है। मेरे जैसे शरणार्थी से इस देश को क्या मिल सकता है फिर भी मुझे सहायता दी गई। इससे बड़ा करुणा का उदाहरण नहीं हो सकता है। मरते दम तक इन बातों का प्रचार करता रहूंगा।'

रविवार को बिमटेक में लगाने के लिए दलाई लामा ने एक पौधा भी भेंट किया। इस मौके पर मौजूद बिमटेक के निदेशक डॉ. हरिवंश चतुर्वेदी और बिमटेक की चेयरपर्सन जयश्री मोहता। • अतुल मोदी

उन्होंने कहा कि एक अशांत मस्तिष्क वाला व्यक्ति कभी सफलता हासिल नहीं कर सकता। स्वस्थ्य मस्तिष्क से शरीर, परिवार, समाज और देश स्वस्थ रहता है। एक साधु होने के नाते स्वर्ग पाने की इच्छा नहीं है। धर्म की आड़ में लोगों की भावनाओं का गलत इस्तेमाल करके धन, पद, प्रतिष्ठा, शक्ति हासिल करना भी हिंसा है। यह स्वीकार्य भी नहीं है। मानसिक शांति शारीरिक दुखों से बहुत ऊपर है। भ्रष्टाचार भी हिंसा का दूसरा रूप है।

दलाई लामा ने कहा कि चीन गलत ढंग से तिब्बत पर अधिकार जमाए हुए है। सामाजिक, आर्थिक या भौगोलिक रूप से कोई लेना-देना नहीं है। यही कारण है कि यूरोपियन यूनियन, भारत और तमाम दूसरे देश उनकी आलोचना करते हैं। अब तो खुद के चीन के बौद्धिक वर्ग ने अपनी सरकार के पक्ष को गलत ठहराना शुरू कर दिया है। पिछले कुछ सालों के दौरान चीनी भाषा में हजारों लेख प्रकाशित हुए हैं, जिनमें चीन के पक्ष को औचित्यहीन बताया गया है। कार्यक्रम में बिमटेक की चेयरपर्सन जयश्री मोहता, आदित्य बिड़ला समूह की निदेशक राजश्री बिड़ला, आईआईएम के संस्थापक ईश्वर दयाल, बिमटेक के बोर्ड ऑफ गवर्नर आदित्य कंडोई और डॉ. हरिवंश चतुर्वेदी उपस्थित रहे।

ग्रेटर नोएडा | वरिष्ठ संवाददाता

दलाई लामा के विचारों की स्वीकार्यता और उनके व्यक्तित्व का असर ही है कि रविवार को ग्रेटर नोएडा में उन्हें सुनने के लिए 10 मुल्कों के लोग पहुंचे। इनमें युवाओं की संख्या अच्छी-खासी थी। वहीं 92 साल के बुजुर्ग और भारत में प्रबंधन शिक्षा का सूत्रपात करने वाले प्रोफेसर ईश्वर दयाल भी आए थे।

आईआईएम लखनऊ और अहमदाबाद जैसे जोटी के प्रबंधन संस्थानों की नींव डालने वाले प्रोफेसर ईश्वर दयाल कार्यक्रम में सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठे हुए थे। जैसे ही दलाई लामा ने अपना संबोधन समाप्त किया तो उन्होंने अपनी बगल में बैठे बिमटेक के निदेशक डॉ. हरिवंश चतुर्वेदी से उनके बारे में पूछा। प्रोफेसर दयाल का परिचय जानने के बाद दलाई लामा ने उनसे मिलने की इच्छा जताई। खड़े हुए और मंच से उतरकर सीधे प्रोफेसर दयाल के पास पहुंचे। उनके हाथों को अपने हाथों में दबा लिया। कई मिनट तक बातचीत की। शहर के सबसे बड़े सामाजिक संगठन वरिष्ठ नागरिक समाज ने इस आयोजन में मदद भी की।

वहीं दलाई लामा ने अपने संबोधन में युवा पीढ़ी का जिम्मेदारी उठाने के लिए आह्वान किया। दलाई लामा को सुनने के लिए भूटान के 100 छात्र-छात्राएं आए हुए थे। कंजूर और ममता सुब्बा इंजीनियरिंग के छात्र हैं। सुजैन मेडिकल की पढ़ाई कर रही हैं। ममता सुब्बा ने कहा कि 'डॉक्टर या इंजीनियर बनने के लिए दलाई लामा को सुनना जरूरी नहीं है, लेकिन अच्छा इंसान बनने में इनकी शिक्षा जरूरी है। मुझे लगता है कि सफल डॉक्टर बनने के लिए अच्छा इंसान होना लाजिमी है।' भूटान, इटली, कनाड़ा, बर्मा, श्रीलंका, मंगोलिया, नेपाल, अंगोला और इंग्लैंड के लोगों ने दलाई लामा को सुना।

व्यक्तित्व का असर

- दलाई लामा को सुनने आए 10 मुल्कों के लोग, इनमें छात्र अधिक थे
- 92 वर्ष के प्रोफेसर ईश्वर दयाल सबसे उम्रदराज थे
- उनसे मिलने के लिए मंच से उतरकर गए दलाई लामा